अमर क्रांतिवीर चन्द्रशेखर आज़ाद

अमर शहीद जीवन चरित्र श्रृंखला

> "दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे,
> आज़ाद ही रहे हैं, आज़ाद ही रहेंगे।"

लेखक एवं संकलन
डॉ. ऋषि आचार्य

प्रकाशक
आचार्य ऋषि फाउंडेशन
(Aacharya Rishi Foundation)

प्रथम संस्करण | जुलाई 2026

Creative Commons License

यह पुस्तक Creative Commons Attribution 4.0 International (CC BY 4.0) के अंतर्गत प्रकाशित की गई है।

आप इस पुस्तक को—

- पढ़ सकते हैं।
- डाउनलोड कर सकते हैं।
- प्रिंट एवं वितरित कर सकते हैं।
- शिक्षण एवं जनजागरण हेतु उपयोग कर सकते हैं।
- अनुवाद, रूपांतरण एवं पुनःप्रकाशित कर सकते हैं।

शर्त केवल इतनी है कि मूल लेखक (डॉ. ऋषि आचार्य) तथा मूल प्रकाशक (आचार्य ऋषि फाउंडेशन) का उचित उल्लेख किया जाए तथा यदि सामग्री में कोई परिवर्तन किया गया हो तो उसे स्पष्ट रूप से दर्शाया जाए।

हमारा विश्वास है कि अमर शहीदों का इतिहास जितने अधिक लोगों तक पहुँचेगा, राष्ट्रचेतना उतनी ही सशक्त होगी।

वन्दे मातरम्।

प्रकाशकीय

युवा पीढ़ी को अपने वास्तविक नायकों से परिचित कराने का एक विनम्र प्रयास

भारत केवल एक भूभाग नहीं, बल्कि त्याग, तपस्या, ज्ञान और बलिदान की अनंत परम्परा का नाम है। इस राष्ट्र की स्वतंत्रता हमें सहज रूप से प्राप्त नहीं हुई। इसके लिए लाखों ज्ञात-अज्ञात वीरों ने अपने सुख, परिवार, भविष्य और अंततः अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। उन्हीं के त्याग का परिणाम है कि आज हम स्वतंत्र भारत में खुली हवा में साँस ले पा रहे हैं।

दुर्भाग्य से समय के साथ हमारी नई पीढ़ी अपने इन वास्तविक नायकों से दूर होती चली गई है। विद्यालयों की पुस्तकों में उन्हें सीमित स्थान मिलता है, जबकि आधुनिक मनोरंजन और डिजिटल माध्यमों में उनका जीवन शायद ही कभी गहराई से प्रस्तुत किया जाता है। परिणामस्वरूप अनेक युवा चन्द्रशेखर आज़ाद, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला ख़ाँ, खुदिराम बोस, दुर्गा भाभी, बटुकेश्वर दत्त और असंख्य अमर सेनानियों के अद्भुत जीवन से अपरिचित रह जाते हैं।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आचार्य ऋषि फाउंडेशन ने "अमर शहीद जीवन चरित्र श्रृंखला" प्रारम्भ करने का संकल्प लिया है। इस श्रृंखला का उद्देश्य केवल इतिहास सुनाना नहीं, बल्कि ऐसे चरित्रों को जीवंत करना है जिनसे आज का प्रत्येक विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक और नागरिक प्रेरणा प्राप्त कर सके।

इस पुस्तिका में प्रयुक्त सभी ऐतिहासिक तथ्य उपलब्ध प्रामाणिक स्रोतों, संदर्भ ग्रंथों तथा विश्वसनीय ऐतिहासिक सामग्रियों के आधार पर प्रस्तुत किए गए हैं। भाषा को सरल, प्रेरणादायक और प्रवाहपूर्ण रखा गया है ताकि यह पुस्तक प्रत्येक आयु वर्ग के पाठकों तक सहजता से पहुँच सके।

श्रृंखला की प्रथम पुस्तिका भारत माता के उस अमर सपूत को समर्पित है जिसने न्यायालय में अपना नाम "आज़ाद", पिता का नाम "स्वतंत्रता" और निवास "जेलखाना" बताया था, और जिसने अपने जीवन के अंतिम क्षण तक अंग्रेज़ी सत्ता के सामने आत्मसमर्पण नहीं किया। उनका जीवन केवल एक क्रांतिकारी की कथा नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, अनुशासन, साहस और राष्ट्रभक्ति की अमर गाथा है।

आइए, हम इस महान क्रांतिवीर के जीवन को केवल पढ़ें ही नहीं, बल्कि उससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन में भी राष्ट्रहित, सत्यनिष्ठा और कर्तव्यपरायणता के आदर्शों को अपनाने का प्रयास करें।

वन्दे मातरम्।
जय हिन्द।

— आचार्य ऋषि फाउंडेशन (ARF)

एक ऐसा बालक जिसने कभी हार मानना नहीं सीखा

> "भारत माता की गोद में जन्म लेने वाले कुछ पुत्र स्वयं इतिहास बन जाते हैं। चन्द्रशेखर आज़ाद उन्हीं में से एक थे।"

23 जुलाई 1906। मध्य भारत की अलीराजपुर रियासत का एक छोटा-सा गाँव—भावरा। चारों ओर पहाड़ियाँ, घने जंगल और प्रकृति की शांत गोद। इसी गाँव में पंडित सीताराम तिवारी और जगरानी देवी के घर एक बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम रखा गया—चन्द्रशेखर। किसी ने नहीं सोचा था कि यही बालक आगे चलकर अंग्रेज़ी साम्राज्य की नींद हराम कर देगा।

चन्द्रशेखर का बचपन किसी राजमहल में नहीं, बल्कि सामान्य ग्रामीण परिवेश में बीता। उनके पिता ईमानदार, स्वाभिमानी और सादगीप्रिय व्यक्ति थे। माता जगरानी देवी धार्मिक, साहसी और संस्कारवान थीं। वे अपने पुत्र को केवल पढ़ा-लिखा नहीं, बल्कि चरित्रवान देखना चाहती थीं।

भावरा के आसपास बड़ी संख्या में भील समुदाय निवास करता था। चन्द्रशेखर का अधिकांश बचपन भील बालकों के साथ खेलते-कूदते बीता। जंगलों में दौड़ना, पेड़ों पर चढ़ना, नदी-नालों को पार करना और तीर-कमान चलाना उनके प्रिय खेल थे। इन्हीं खेलों ने उनके शरीर को फुर्तीला, साहसी और कठिन परिस्थितियों के अनुकूल बना दिया। आगे चलकर यही कौशल उनके क्रांतिकारी जीवन को बड़ी शक्ति बना।

बचपन से ही उनमें एक विशेष गुण था—अन्याय सहन न करना। यदि किसी छोटे बच्चे के साथ गलत व्यवहार होता, तो चन्द्रशेखर तुरंत उसके पक्ष में खड़े हो जाते। उन्हें डराना आसान नहीं था। उनकी आँखों में बचपन से ही आत्मविश्वास झलकता था।

माता चाहती थीं कि उनका पुत्र संस्कृत का विद्वान बने। इसलिए किशोरावस्था में उन्हें आगे की शिक्षा के लिए काशी (बनारस) भेजा गया। काशी उस समय केवल शिक्षा का केंद्र ही नहीं, बल्कि राष्ट्रीय जागरण का भी प्रमुख केन्द्र बन चुकी थी। देशभर से विद्यार्थी वहाँ आते थे और स्वतंत्रता की चर्चा हर ओर सुनाई देती थी।

उधर पूरे भारत में अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध असंतोष बढ़ रहा था। जलियाँवाला बाग की त्रासदी ने लोगों के हृदय को झकझोर दिया था। महात्मा गाँधी ने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया और हजारों विद्यार्थी, युवा तथा सामान्य नागरिक स्वतंत्रता की लड़ाई में उतरने लगे।

काशी की गलियों में गूँजते राष्ट्रगीत, विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के आह्वान और देशभक्ति से भरे वातावरण ने किशोर चन्द्रशेखर के मन में भी गहरी हलचल पैदा कर दी। अब उनके सामने केवल पढ़ाई का लक्ष्य नहीं था; उनके भीतर एक बड़ा प्रश्न जन्म ले चुका था—

> "क्या मैं अपने देश को गुलाम देखकर चुप बैठ सकता हूँ?"

शायद उन्हें स्वयं भी उस समय यह पता नहीं था कि इस प्रश्न का उत्तर उनके पूरे जीवन की दिशा बदल देगा।

जब पहली बार अंग्रेज़ों से टकराए चन्द्रशेखर

सन 1921। पूरे देश में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन अपने चरम पर था। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जा रहा था, सरकारी विद्यालयों और न्यायालयों का विरोध हो रहा था और हजारों विद्यार्थी भी इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग ले रहे थे।

काशी में पढ़ रहे लगभग पंद्रह वर्षीय चन्द्रशेखर भी इस राष्ट्रीय जागरण से अछूते नहीं रहे। उन्होंने भी आंदोलन में भाग लेने का निश्चय किया। उनके लिए यह केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि अपनी मातृभूमि के सम्मान का प्रश्न था।

एक दिन प्रदर्शन के दौरान अंग्रेज़ पुलिस ने अनेक युवाओं को गिरफ्तार कर लिया। उनमें चन्द्रशेखर भी थे। उनकी आयु कम थी, इसलिए पुलिस को लगा कि यह बालक डर जाएगा और क्षमा माँग लेगा। परन्तु वे नहीं जानते थे कि उनके सामने खड़ा किशोर साधारण नहीं था।

अगले दिन उन्हें न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। अंग्रेज़ मजिस्ट्रेट ने कठोर स्वर में पूछा—

"तुम्हारा नाम?"

बालक ने बिना झिझक उत्तर दिया—

"आज़ाद।"

मजिस्ट्रेट का चेहरा तमतमा उठा।

उसने दूसरा प्रश्न किया—

"पिता का नाम?"

उत्तर आया—

"स्वतंत्रता।"

अब अदालत में सन्नाटा छा गया।

मजिस्ट्रेट ने तीसरा प्रश्न पूछा—

"घर कहाँ है?"

इस बार भी उत्तर पहले जैसा ही निर्भीक था—

"जेलखाना।"

कुछ क्षणों के लिए अदालत में उपस्थित सभी लोग उस निडर बालक को देखते रह गए। अंग्रेज़ अधिकारी क्रोध से भर उठा। उसने तुरंत दंड सुनाया—पंद्रह बेंत।

दंड प्रारम्भ हुआ। प्रत्येक बेंत पूरी ताकत से उनकी पीठ पर बरसाया गया। चमड़ी फटने लगी, रक्त बहने लगा, लेकिन हर प्रहार के साथ उस किशोर के मुख से एक ही स्वर निकलता रहा—

> "भारत माता की जय!"
> "भारत माता की जय!"
> "भारत माता की जय!"

अंग्रेजों को आशा थी कि कुछ ही बेंतों के बाद वह दया की भीख माँगेगा, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। पंद्रहों बेंत सह लेने के बाद भी उसके चेहरे पर भय नहीं था। उस दिन अंग्रेजों ने एक बालक को दंड अवश्य दिया, किन्तु उसी दिन भारत को अपना "आज़ाद" मिल गया। यही वह घटना थी जिसके बाद चन्द्रशेखर तिवारी का नाम इतिहास में सदा-सर्वदा के लिए चन्द्रशेखर आज़ाद बन गया।

जेल से रिहा करते समय नियम के अनुसार उन्हें तीन आने दिए गए। कहा जाता है कि उन्होंने वे सिक्के जेलर के मुँह पर फेंक दिए और उन्हें लेने से इंकार कर दिया। यह केवल तीन आने का तिरस्कार नहीं था, बल्कि उस अन्यायपूर्ण सत्ता के अहंकार को चुनौती थी जो भारतीयों के स्वाभिमान को खरीद लेना चाहती थी।

उस दिन से उन्होंने एक मौन संकल्प लिया—जीवन का प्रत्येक क्षण भारत की स्वतंत्रता के लिए समर्पित होगा।

> एक साहसी उत्तर कभी-कभी पूरे जीवन की पहचान बन जाता है। चन्द्रशेखर ने केवल अपना नाम नहीं बताया था, उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य घोषित कर दिया था।

क्रांति की राह पर पहला कदम

अदालत में मिली सजा ने चन्द्रशेखर के शरीर पर घाव अवश्य दिए, लेकिन उनके मन को और अधिक दृढ़ बना दिया। अब उन्हें विश्वास हो गया था कि विदेशी शासन न्याय से नहीं, बल्कि भय और बल के सहारे चल रहा है। ऐसे शासन से केवल विनती करके स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती।

काशी उन दिनों राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख केंद्र थी। यहाँ विद्यार्थियों, समाजसेवियों और देशभक्तों के बीच स्वतंत्रता पर खुलकर चर्चा होती थी। चन्द्रशेखर ऐसे अनेक लोगों के संपर्क में आए जो देश को आज़ाद देखने का सपना लेकर कार्य कर रहे थे। धीरे-धीरे उनका झुकाव क्रांतिकारी विचारधारा की ओर बढ़ने लगा।

इसी दौरान उनका परिचय उन युवाओं से हुआ जो गुप्त रूप से अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध संगठित हो रहे थे। यह संगठन था—हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA)। इसके प्रमुख नेताओं में रामप्रसाद बिस्मिल, शचीन्द्रनाथ सान्याल, योगेशचन्द्र चटर्जी तथा अन्य क्रांतिकारी शामिल थे। संगठन का उद्देश्य भारत को विदेशी शासन से मुक्त कर एक स्वतंत्र गणराज्य की स्थापना करना था।

चन्द्रशेखर की निर्भीकता, अनुशासन और तेजस्वी व्यक्तित्व ने शीघ्र ही वरिष्ठ क्रांतिकारियों का ध्यान आकर्षित किया। वे कम बोलते थे, लेकिन जो जिम्मेदारी लेते, उसे पूरी निष्ठा से निभाते। संगठन के नियम उनके लिए आदेश के समान थे। साथियों ने देखा कि यह युवा संकट की घड़ी में घबराता नहीं, बल्कि सबसे पहले आगे बढ़कर जिम्मेदारी उठाता है।

क्रांतिकारी जीवन बिल्कुल आसान नहीं था। स्थायी घर नहीं, निश्चित भोजन नहीं, आराम का कोई साधन नहीं। कभी साधु का वेश, कभी किसान, कभी मजदूर और कभी विद्यार्थी बनकर रहना पड़ता था। कई-कई दिनों तक भूख रहना भी सामान्य बात थी। पुलिस की निगाह हर समय उनके पीछे लगी रहती थी।

लेकिन चन्द्रशेखर ने कभी शिकायत नहीं की। उनका मानना था कि जिसने मातृभूमि की सेवा का मार्ग चुना है, उसे व्यक्तिगत सुख-दुःख से ऊपर उठना होगा।

इन्हीं दिनों उन्होंने निशानेबाजी का कठोर अभ्यास शुरू किया। कहा जाता है कि वे अपने लक्ष्य पर असाधारण सटीकता से निशाना लगाते थे। साथ ही वे नियमित व्यायाम करते, शरीर को चुस्त रखते और अपने साथियों को भी शारीरिक रूप से मजबूत रहने के लिए प्रेरित करते थे। उनके लिए एक क्रांतिकारी का मन जितना दृढ़ होना चाहिए, शरीर भी उतना ही सक्षम होना चाहिए।

धीरे-धीरे संगठन के भीतर उनका सम्मान बढ़ने लगा। वरिष्ठ नेताओं को विश्वास हो गया कि यह युवा केवल साहसी ही नहीं, बल्कि भविष्य में संगठन का मजबूत स्तंभ भी बन सकता है।

चन्द्रशेखर आज़ाद अब केवल एक उत्साही किशोर नहीं रहे थे। वे भारत की क्रांतिकारी चेतना के उभरते हुए नेतृत्व का हिस्सा बन चुके थे।

HRA क्या था?
हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) की स्थापना 1924 में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संगठित क्रांतिकारी संघर्ष के उद्देश्य से की गई थी। बाद में इसी संगठन का विस्तार होकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) बना, जिससे भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु और अनेक प्रसिद्ध क्रांतिकारी जुड़े।

जो शासन न्याय से नहीं, बल्कि भय और बल के सहारे चल रहा हो , जहाँ लोगो को डरा धमका कर और झूठे भय दिखाकर किसी काम को करने के लिए विवश किया जाता हो वह शासन कभी भी अच्छा शासन नहीं कहलाया जा सकता, ऐसे शासन से केवल विनती करके अपने अधिकार प्राप्त नहीं किये जा सकते , वीर शहीदों ने ऐसे शासन को बदल डालना ही अपना लक्ष्य बनाया था।

महान नेतृत्व अचानक पैदा नहीं होता। अनुशासन, त्याग, निरंतर अभ्यास और सही उद्देश्य के प्रति समर्पण ही एक साधारण युवक को असाधारण बना देता है।

काकोरी के बाद जब सबकी नज़रें आज़ाद पर टिक गईं

9 अगस्त 1925। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक साहसिक दिन। क्रांतिकारियों ने उत्तर प्रदेश के काकोरी स्टेशन के निकट चलती ट्रेन से अंग्रेज़ सरकार का सरकारी खजाना अपने कब्ज़े में ले लिया। इस घटना का उद्देश्य व्यक्तिगत धन प्राप्त करना नहीं था, बल्कि क्रांतिकारी आंदोलन के लिए संसाधन जुटाना और अंग्रेज़ी शासन को यह संदेश देना था कि भारत के युवा अब अन्याय के सामने झुकने वाले नहीं हैं।

इस घटना ने पूरे ब्रिटिश प्रशासन को हिला दिया। ब्रिटिश सरकार ने हर स्तर पर जाँच शुरू की। देशभर में छापे पड़े, सैकड़ों लोगों से पूछताछ हुई और अनेक क्रांतिकारियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला ख़ाँ, राजेन्द्रनाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह सहित कई प्रमुख क्रांतिकारियों को फाँसी या कठोर दंड मिला। इससे क्रांतिकारी आंदोलन को गहरा आघात पहुँचा। ऐसा लगने लगा कि संगठन अब बिखर जाएगा।

लेकिन एक व्यक्ति ऐसा था जो अंग्रेज़ों के हाथ नहीं आया—

चन्द्रशेखर आज़ाद।

उन्होंने गिरफ्तारी से बचते हुए स्वयं को सुरक्षित रखा, क्योंकि वे जानते थे कि यदि शेष संगठन को बचाना है, तो किसी अनुभवी नेतृत्व का जीवित रहना आवश्यक है। यह निर्णय उनके धैर्य और दूरदर्शिता का प्रमाण था।

अब उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती थी—टूट चुके संगठन को फिर से खड़ा करना।

उन्होंने देश के विभिन्न क्षेत्रों की गुप्त यात्राएँ शुरू कीं। पुराने साथियों से संपर्क किया, नए युवाओं को जोड़ा और क्रांतिकारी गतिविधियों को पुनः संगठित करने का कठिन कार्य अपने हाथ में लिया। वे कभी साधु बनकर, कभी किसान, कभी व्यापारी और कभी सामान्य यात्री का वेश धारण करके एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचते थे। अंग्रेज़ पुलिस उनकी तलाश में पूरे देश में घूम रही थी, लेकिन वे हर बार उनकी पकड़ से दूर निकल जाते थे।

यही वह समय था जब चन्द्रशेखर आज़ाद केवल एक साहसी क्रांतिकारी नहीं रहे, बल्कि एक असाधारण संगठनकर्ता के रूप में उभरकर सामने आए। वे जानते थे कि केवल साहस से स्वतंत्रता नहीं मिलती; उसके लिए अनुशासित संगठन, विश्वसनीय साथी और स्पष्ट उद्देश्य भी आवश्यक होते हैं।

कुछ ही वर्षों में उनके नेतृत्व में क्रांतिकारी आंदोलन ने फिर गति पकड़ ली। आगे चलकर अनेक तेजस्वी युवा, जिनमें भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, बटुकेश्वर दत्त, भगवतीचरण वोहरा और अन्य क्रांतिकारी शामिल थे, उसी संगठनात्मक धारा से जुड़े जिसे आज़ाद ने नए जीवन का संबल दिया। बाद में संगठन का पुनर्गठन होकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (**HSRA**) के रूप में विकसित हुआ।

ब्रिटिश सरकार के लिए अब चन्द्रशेखर आज़ाद केवल एक वांछित व्यक्ति नहीं थे, बल्कि पूरे क्रांतिकारी आंदोलन की धड़कन बन चुके थे।

क्या आप जानते हैं?

- काकोरी कांड के बाद भी चन्द्रशेखर आज़ाद अंग्रेज़ों की गिरफ्त से बाहर रहे।
- उन्होंने बिखरे हुए क्रांतिकारी संगठन को पुनः संगठित करने में निर्णायक भूमिका निभाई।
- उनकी संगठन क्षमता के कारण ही अनेक युवा क्रांतिकारी एक साझा उद्देश्य के लिए एकत्र हो सके।
- अंग्रेज़ सरकार ने उन्हें पकड़ने के लिए कई बार बड़े पैमाने पर अभियान चलाए, लेकिन वे हर बार बच निकले।

सच्चा नेता वह नहीं जो केवल संघर्ष करे, बल्कि वह है जो कठिनतम परिस्थितियों में भी अपने साथियों का विश्वास बनाए रखे और टूटे हुए संगठन में फिर से प्राण फूँक दे।

देश को बदलने का काम भी अकेले नहीं किया जा सकता , इसकी शुरुआत देशप्रेमी लोगो को जोड़कर उनका संगठन बनाकर ही की जा सकती है।

भ्रष्ट व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के काम में वही भ्रष्ट व्यवस्था आपकी दुश्मन बन जाती है इसलिए इन कामों को करते समय हमें आज़ाद की तरह जोश के साथ साथ होश में काम करना , चतुर बनना और समय को देखकर काम करना बहुत जरूरी है।

भगत सिंह और आज़ाद — क्रांति के दो तेजस्वी सितारे

काकोरी कांड के बाद क्रांतिकारी आंदोलन को नए नेतृत्व की आवश्यकता थी। दूसरी ओर देशभर के युवाओं में भी स्वतंत्रता के लिए कुछ बड़ा करने की बेचैनी बढ़ रही थी। ऐसे समय में दो महान व्यक्तित्व एक-दूसरे के निकट आए—चन्द्रशेखर आज़ाद और भगत सिंह।

दोनों की कार्यशैली अलग थी, लेकिन लक्ष्य एक था—भारत की पूर्ण स्वतंत्रता।

चन्द्रशेखर आज़ाद

उम्र और अनुभव में बड़े थे। वे अत्यंत अनुशासित, सतर्क और संगठन चलाने में निपुण थे।

भगत सिंह

गहन अध्ययनशील, दूरदर्शी और तेजस्वी विचारक थे। जब ये दोनों एक साथ आए, तो क्रांतिकारी आंदोलन को नई दिशा और नई ऊर्जा मिली।

सन् 1928 में संगठन का पुनर्गठन किया गया और उसका नाम रखा गया—

हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA)।

इस नए संगठन में चन्द्रशेखर आज़ाद को सर्वोच्च नेतृत्व की जिम्मेदारी मिली। वे संगठन के कमांडर-इन-चीफ के रूप में कार्य करने लगे। उनका मुख्य दायित्व था—क्रांतिकारियों की सुरक्षा, प्रशिक्षण, गुप्त ठिकानों की व्यवस्था, आर्थिक संसाधन जुटाना तथा प्रत्येक अभियान की रणनीति तैयार करना।

इसी बीच एक ऐसी घटना घटी जिसने पूरे देश को झकझोर दिया। 30 अक्टूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध में निकाले गए जुलूस पर अंग्रेज पुलिस ने निर्ममता से लाठीचार्ज किया। इस हमले में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हुए और कुछ दिनों बाद उनका निधन हो गया।

यह समाचार सुनकर पूरे देश में आक्रोश फैल गया। क्रांतिकारियों ने इसे केवल एक व्यक्ति की मृत्यु नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का अपमान माना।

योजना बनी कि इस अत्याचार के लिए जिम्मेदार पुलिस अधिकारी जेम्स ए. स्कॉट को दंड दिया जाएगा। किंतु पहचान की भूल के कारण 17 दिसंबर 1928 को सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन पी. सॉन्डर्स मारा गया। इस अभियान में भगत सिंह, राजगुरु और अन्य साथियों ने भाग लिया, जबकि पूरी योजना के संचालन और साथियों की सुरक्षित वापसी में चन्द्रशेखर आज़ाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उन्होंने पीछे रहकर सुरक्षा कवच की तरह अपने साथियों को बचाया और अंग्रेज पुलिस को काफी देर तक रोके रखा, जिससे सभी क्रांतिकारी सुरक्षित निकल सके।

इस घटना के बाद अंग्रेज सरकार ने क्रांतिकारियों की तलाश और तेज़ कर दी। भगत सिंह सहित अनेक युवाओं के पोस्टर शहर-शहर लगाए गए। लेकिन चन्द्रशेखर आज़ाद अब भी पुलिस की पकड़ से बाहर थे। अंग्रेज अधिकारियों के बीच यह कहावत चल पड़ी थी कि—

> "आज़ाद को पकड़ना आसान नहीं।"

वे लगातार स्थान बदलते, नए युवाओं को प्रेरित करते और संगठन को जीवित रखते रहे। उनके लिए सबसे बड़ी चिंता अपनी सुरक्षा नहीं, बल्कि साथियों और आंदोलन की सुरक्षा थी।

रोचक तथ्य

- **HSRA** के गठन के बाद चन्द्रशेखर आज़ाद उसके प्रमुख सैन्य नेतृत्व (Commander-in-Chief) के रूप में कार्य करते थे।
- भगत सिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद एक-दूसरे का अत्यंत सम्मान करते थे।
- सॉन्डर्स प्रकरण के बाद साथियों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित करने में आज़ाद की निर्णायक भूमिका थी।
- अंग्रेज़ सरकार ने उन पर भारी इनाम घोषित किया था, फिर भी वे वर्षों तक गिरफ्तारी से बचते रहे।

महान उपलब्धियाँ अकेले नहीं मिलतीं। जब योग्य नेतृत्व, स्पष्ट उद्देश्य और समर्पित साथी एक साथ आते हैं, तब इतिहास की दिशा बदल जाती है।

वह क्रांतिकारी जिसे अंग्रेज़ कभी जीवित नहीं पकड़ सके

चन्द्रशेखर आज़ाद का नाम सुनते ही अंग्रेज़ अधिकारियों के चेहरे पर चिंता की रेखाएँ उभर आती थीं। इसका कारण केवल उनका साहस नहीं था, बल्कि उनकी अद्भुत सूझबूझ, गोपनीय कार्यशैली और परिस्थिति के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की क्षमता भी थी।

वे कभी एक स्थान पर अधिक समय तक नहीं रुकते थे। आज प्रयागराज, तो कल कानपुर; कभी झाँसी के जंगल, तो कभी बनारस की गलियाँ। उनके रहने, मिलने और यात्रा करने का कोई निश्चित तरीका नहीं था। यही कारण था कि वर्षों तक अंग्रेजी पुलिस उनकी तलाश करती रही, परन्तु वे हर बार उनकी पकड़ से दूर निकल जाते थे।

कुछ समय तक उन्होंने झाँसी के निकट ओरछा के जंगलों को अपना प्रमुख ठिकाना बनाया। वहाँ वे अपने साथियों को निशानेबाजी, शारीरिक प्रशिक्षण और अनुशासन का अभ्यास कराते थे। स्थानीय लोगों के बीच वे कभी "पंडित हरिशंकर ब्रह्मचारी" के नाम से जाने जाते थे। साधारण वस्त्र, सादा जीवन और सहज व्यवहार—कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि यही व्यक्ति पूरे ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे वांछित क्रांतिकारी है।

आज़ाद का जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण था। संगठन के लिए जो भी धन आता, उसका उपयोग केवल आंदोलन की आवश्यकताओं में किया जाता। वे अपने ऊपर एक पैसा भी व्यर्थ खर्च नहीं करते थे। कई बार ऐसा भी हुआ कि साथियों ने उन्हें पहले भोजन करने के लिए कहा, लेकिन उन्होंने भोजन स्वयं लेने के बजाय किसी अधिक आवश्यकता वाले साथी को दे दिया।

वे अनुशासन के विषय में बहुत कठोर थे। उनका स्पष्ट मत था कि क्रांति केवल साहस से नहीं, बल्कि चरित्र और अनुशासन से सफल होती है। यदि कोई साथी संगठन के नियमों की उपेक्षा करता, तो वे उसे प्रेम से समझाते, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय लेने से भी पीछे नहीं हटते थे।

उनकी निशानेबाजी की चर्चा दूर-दूर तक थी। कहा जाता है कि वे अपने लक्ष्य पर असाधारण सटीकता से गोली चलाते थे। यही कारण था कि साथी उन पर पूरा विश्वास करते थे। किसी भी कठिन अभियान में यदि आज़ाद साथ हों, तो साथियों का आत्मविश्वास कई गुना बढ़ जाता था।

लेकिन उनका सबसे बड़ा गुण था—साथियों के प्रति निष्ठा। वे स्वयं संकट में पड़ जाते, पर अपने किसी साथी को अकेला नहीं छोड़ते थे। संगठन की सुरक्षा उनके लिए अपने जीवन से भी अधिक महत्वपूर्ण थी।

इसी कारण क्रांतिकारी उन्हें केवल अपना नेता नहीं, बल्कि अपना बड़ा भाई और संरक्षक मानते थे।

ब्रिटिश सरकार ने उन्हें पकड़ने के लिए बड़े-बड़े इनाम घोषित किए। मुखबिरों का जाल बिछाया गया। जगह-जगह छापे मारे गए। फिर भी वर्षों तक अंग्रेज़ पुलिस उन्हें गिरफ्तार नहीं कर सकी। वे सचमुच अपने नाम के अनुरूप थे—

"आज़ाद"।

क्या आप जानते हैं?

- झाँसी के आसपास के क्षेत्र में आज़ाद ने लंबे समय तक गुप्त रूप से निवास किया।
- वे "पंडित हरिशंकर ब्रह्मचारी" जैसे छद्म नामों का उपयोग करते थे।
- वे उत्कृष्ट निशानेबाज और नियमित व्यायाम करने वाले अनुशासित क्रांतिकारी थे।
- संगठन का धन कभी अपने व्यक्तिगत उपयोग में नहीं लाते थे।
- साथी उन्हें अत्यंत विश्वसनीय और निर्भीक नेता मानते थे।

व्यक्ति की सबसे बड़ी पहचान उसका पद नहीं, उसका चरित्र होता है। चन्द्रशेखर आज़ाद ने सिद्ध किया कि सादगी, अनुशासन और निस्वार्थ नेतृत्व ही सच्ची महानता की नींव हैं।

अंतिम संग्राम — जब आज़ाद ने अपने वचन को निभाया

27 फ़रवरी 1931। प्रयागराज का अल्फ्रेड पार्क (वर्तमान चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क)। सुबह का समय था। चन्द्रशेखर आज़ाद अपने साथी सुखदेव राज से एक महत्वपूर्ण चर्चा कर रहे थे। उन्हें यह आभास भी नहीं था कि उनकी गतिविधियों की सूचना अंग्रेज़ पुलिस तक पहुँच चुकी है। एक मुखबिर के विश्वासघात ने अंग्रेज़ अधिकारियों को उनके ठिकाने की जानकारी दे दी।

कुछ ही देर में पार्क चारों ओर से पुलिस बल से घिर गया। अंग्रेज़ अधिकारियों ने आत्मसमर्पण करने का आदेश दिया, लेकिन यह उस व्यक्ति से कहा जा रहा था जिसने वर्षों पहले स्वयं से एक प्रतिज्ञा की थी —"अंग्रेज़ मुझे कभी जीवित नहीं पकड़ पाएँगे।"

आज़ाद ने सबसे पहले अपने साथी सुखदेव राज को सुरक्षित निकल जाने का आदेश दिया। उनके लिए अपने प्राणों से अधिक महत्वपूर्ण अपने साथियों का जीवन और आंदोलन का भविष्य था। सुखदेव राज उनके आदेश का पालन करते हुए वहाँ से निकलने में सफल रहे, जबकि आज़ाद अकेले ही पुलिस का सामना करते रहे।

पार्क में गोलियों की आवाज़ गूँजने लगी। एक ओर बड़ी संख्या में सशस्त्र पुलिस थी, दूसरी ओर अकेले चन्द्रशेखर आज़ाद। वे पेड़ की ओट लेकर अदभुत साहस के साथ मुकाबला करते रहे। कई पुलिसकर्मी घायल हुए, लेकिन धीरे-धीरे उनकी गोलियाँ कम होती गईं।

चारों ओर से अंग्रेज़ों से और उनकी गोलियों की बाँछार से घिरे होने के बाद भी आज वो एक शेर की तरह लड़ रहे हैं और इस अंतिम लड़ाई में वे वीर गति को प्राप्त हुए। उनकी आयु उस समय मात्र **24** वर्ष थी, लेकिन इन चौबीस वर्षों में उन्होंने जो इतिहास रचा, वह सदियों तक भारतीयों को प्रेरित करता रहेगा। उनकी स्मृति-स्थली उत्तर प्रदेश के कर्नलगंज, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश में स्थित है जिसे आज चन्द्रशेखर आज़ाद पार्क के नाम से जाना जाता है। पार्क में उनकी भव्य प्रतिमा स्थापित है और यह स्थान आज भी देशभक्तों के लिए प्रेरणा-स्थल माना जाता है। हर देशप्रेमी को राष्ट्र तीर्थ के रूप में इस पवित्र स्थल के दर्शन करना चाहिए।

> **रोचक तथ्य:** जिस वृक्ष की ओट लेकर आज़ाद ने अंग्रेज़ों से अंतिम संघर्ष किया था, उसे अंग्रेज़ सरकार ने बाद में कटवा दिया था, क्योंकि वह स्थान लोगों के लिए राष्ट्रीय प्रेरणा का केंद्र बन गया था। बाद में वहाँ स्मारक विकसित किया गया।

जीवन की उम्र नहीं, उद्देश्य की ऊँचाई मनुष्य को अमर बनाती है। चन्द्रशेखर आज़ाद ने अपने वचन को निभाकर दिखाया कि सिद्धांतों के लिए जिया गया जीवन कभी समाप्त नहीं होता।

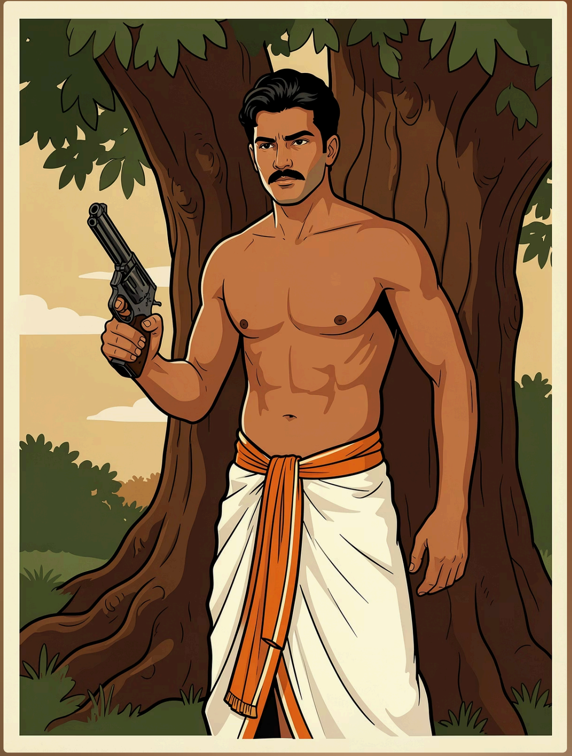

आज के भारत के लिए चन्द्रशेखर आज़ाद के जीवन से 10 सीख

1

कठिन परिस्थितियाँ महान व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं।

2

आत्मसम्मान से कभी समझौता न करें।

3

शरीर और मन—दोनों को मजबूत बनाइए।

4

अनुशासन के बिना कोई बड़ा लक्ष्य प्राप्त नहीं होता।

5

सच्चा नेता पहले स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करता है।

1

मित्रों और साथियों के प्रति निष्ठावान रहें।

2

राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखें।

3

संकट में घबराने के बजाय समाधान खोजें।

4

साहस का अर्थ लापरवाही नहीं, बल्कि सही निर्णय लेना है।

5

ऐसा जीवन जिएँ कि आने वाली पीढ़ियाँ भी आपको सम्मान से याद करें।

अमर वचन

> "दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे,
> आज़ाद ही रहे हैं, आज़ाद ही रहेंगे।"

यह केवल एक नारा नहीं था, बल्कि चन्द्रशेखर आज़ाद के सम्पूर्ण जीवन का सार था। उन्होंने इसे कहा भी और अपने जीवन से सिद्ध भी किया।

देश को महान बनाने के लिए हर पीढ़ी को अपने-अपने "आज़ाद" बनना पड़ता है। आज हमारे हाथों में हथियार नहीं, बल्कि ईमानदारी, चरित्र, ज्ञान, परिश्रम और राष्ट्र के प्रति कर्तव्य का दायित्व है। यही अमर शहीदों के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

एक स्वप्न, जो भारत की नई पीढ़ी को बदल सकता है

क्रांति चेतना स्थल

कल्पना कीजिए...

आप अपने परिवार के साथ किसी ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं, जहाँ प्रवेश करते ही सामने भारत माता की भव्य प्रतिमा दिखाई देती है। उनके चरणों में भारत के वे अमर सपूत खड़े हैं, जिनके त्याग और बलिदान ने हमें स्वतंत्र भारत का अमूल्य उपहार दिया।

एक ओर चन्द्रशेखर आज़ाद अपनी अडिग दृष्टि के साथ खड़े हैं, तो दूसरी ओर भगत सिंह अपने अद्भुत आत्मविश्वास के साथ। पास ही रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला ख़ाँ, राजगुरु, सुखदेव, खुदीराम बोस, ऊधम सिंह, रानी लक्ष्मीबाई, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस और भारत के अनेक अमर शहीद अपनी जीवनगाथा सुनाने के लिए मानो आज भी हमारे बीच उपस्थित हैं।

हर प्रतिमा के साथ उनका संक्षिप्त जीवन परिचय, दुर्लभ चित्र, प्रेरक प्रसंग, अंतिम संदेश और उनके जीवन पर आधारित डिजिटल प्रस्तुति उपलब्ध हो। बच्चे केवल नाम याद करके वापस न जाएँ, बल्कि यह समझकर लौटें कि इन महान विभूतियों ने किन परिस्थितियों में अपने प्राण राष्ट्र के लिए समर्पित किए।

आचार्य ऋषि फाउंडेशन का स्वप्न है कि भारत में ऐसा एक अद्वितीय "क्रांति चेतना स्थल" स्थापित किया जाए—एक ऐसा राष्ट्रीय प्रेरणा केंद्र जहाँ इतिहास केवल पुस्तकों में नहीं, बल्कि जीवंत अनुभव के रूप में सामने आए।

इस परिसर में केवल प्रतिमाएँ ही नहीं, बल्कि—

- अमर शहीदों की जीवन-दीर्घाएँ
- दुर्लभ ऐतिहासिक दस्तावेज़
- विद्यार्थियों के लिए प्रेरक भ्रमण
- राष्ट्रभक्ति पुस्तकालय
- शोध एवं अध्ययन केंद्र
- युवा नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम
- देशभक्ति पर आधारित प्रकाश एवं ध्वनि (Light & Sound) प्रस्तुति
- राष्ट्र निर्माण पर नियमित व्याख्यान और कार्यशालाएँ

जैसी अनेक गतिविधियाँ संचालित की जाएँगी, ताकि यह स्थान केवल स्मारक न रहकर राष्ट्रचरित्र निर्माण का जीवंत केंद्र बन सके।

आज भारत में लाखों युवा प्रेरणा की खोज में हैं। हमारा विश्वास है कि यदि उन्हें अपने वास्तविक नायकों के जीवन से जोड़ दिया जाए, तो उनके भीतर राष्ट्रसेवा, ईमानदारी, नेतृत्व और कर्तव्यबोध की नई ज्योति प्रज्वलित हो सकती है।

यह केवल एक निर्माण परियोजना नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के चरित्र निर्माण का राष्ट्रीय अभियान है।

क्या आप इस राष्ट्रकार्य के सहभागी बनेंगे?

यदि आप भी मानते हैं कि भारत की नई पीढ़ी को अपने अमर शहीदों से जोड़ना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, तो इस अभियान में हमारे साथ जुड़िए।

आपका सहयोग—

- इस संदेश को अधिक लोगों तक पहुँचाकर,
- इस पुस्तक को विद्यालयों, महाविद्यालयों और पुस्तकालयों तक पहुँचाकर,
- स्वयंसेवक बनकर,
- अथवा अपनी सामर्थ्य के अनुसार आर्थिक सहयोग देकर,

इस राष्ट्रीय स्वप्न को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

आइए, हम मिलकर ऐसा भारत बनाएँ जहाँ हर बच्चा अपने अमर शहीदों को केवल पहचानता ही नहीं, बल्कि उनके आदर्शों को अपने जीवन में भी अपनाता है।

वन्दे मातरम्। जय हिन्द।

संपर्क करे : आचार्य ऋषि फाउंडेशन , पुणे, भारत .
www.aacharyarishi.org